*गवर्नर का भाषण**

दुव्वुरि सुब्बाराव

भारिबैं गवर्नरों के मुख्य भाषणों का ''केंद्रीय बैंकिंग परिप्रेक्ष: गवर्नरों के भाषण'' नामक कंपेंडियम भारतीय रिज़र्व बैंक की ओर से अपने पूर्ववर्ती नेताओं के प्रति प्लेटिनम जयंती भेंट है। रिज़र्व बैंक में हम सभी के लिए यह बात बेहद महत्वपूर्ण है कि इस पुस्तक का विमोचन माननीय प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा किया जा रहा है जो स्वयं 1982 से 1985 तक रिज़र्व बैंक के गवर्नर थे। हमारे लिए यह भी बेहद खुशी की बात है कि प्रधानमंत्री के अलावा तीन पूर्व गवर्नर भी यहां उपस्थित हैं। अत:, यह पुस्तक न केवल इसकी सामग्री के कारण से बल्कि इस कारण से भी बेहद महत्वपूर्ण है कि इसके विमोचन के समय इतने प्रतिष्ठित लोग यहां उपस्थित हैं।

2. किसी संस्था के लिए 75 वर्ष की अवधि तुलनात्मक रूप से कम होती है। फिर भी, 1935 में स्थापना के बाद से रिज़र्व बैंक की यात्रा घटनापूर्ण रही है और इसकी विद्वत्ता को आकार मिला है बल्कि देश की आर्थिक नीति में महत्वपूर्ण स्थान भी मिला है। इस समय के दौरान व्यापक बदलाव हुए है - आर्थिक विचारधारा में व्यापक बदलाव, आर्थिक विकास पर नया परिप्रेक्ष, लोगों की बढ़ती आकांक्षा, नए वित्तीय नवोन्मेष और बदलाव लाती प्रौद्योगिकीय सफलताएं। इन सभी बदलावों ने रिज़र्व बैंक को प्रभावित किया है और इसने इनका प्रतिसाद अपने अनूठे तरीके से दिया है।

3. रिज़र्व बैंक की 75 वर्ष की यात्रा देशी और विदेशी दोनों ही क्षेत्रों में ऐतिहासिक घटनाओं से भरी हुई है। अंतरराष्ट्रीय रूप से, 1930 के दशक की महामंदी; द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात के समय और उसके परिणामी युद्ध-निधीयन की चुनौतियों; 1944 में ब्रेटन वुड्स प्रणाली की स्थापना; स्वर्ण मान को सुलझाना और 1970 के दशक के तेल के मूल्यों के आघात; 1980 के दशक का तीसरा वैश्विक ऋण संकट; और अभी हाल ही में वैश्विक वित्तीय संकट की घटनाएं हुई हैं।

* माननीय प्रधान मंत्री डॉ.मनमोहन सिंह द्वारा 15 जनवरी 2010 को दिल्ली में ''केंद्रीय बैंकिंग परिप्रेक्ष: गवर्नरों के भाषण'' नामक पुस्तक के विमोचन के अवसर पर डॉ. दुव्वुरि सुब्बाराव, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा दिया गया स्वागत भाषण।

4. देशी तौर पर भी, ऐतिहासिक घटनाएं हुईं और उनमें अंतर था - शुरुआत में पांच वर्षीय योजना; और आर्थिक विकास में इतिहास के सर्वाधिक महत्वाकांक्षी और बड़े प्रयोग, 1960 के दशक में दो युद्धों के पश्च-प्रभाव, 1966 में रुपए का अवमूल्यन, 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण, 1990 के दशक के प्रारंभ में भुगतान संतुलन का संकट और असामान्य आर्थिक सुधार अपनाना जिसने हमारी आर्थिक नीति की दिशा बदल दी। रिज़र्व बैंक को इस बात का गर्व है कि उसने इन घटनाओं में सही भूमिका निभाई, उनका प्रतिसाद संवेदनशीलता, व्यावसायिकता और समन्वयन से दिया।

5. रिज़र्व बैंक को आज जो उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त है वह विद्वान नेतृत्व और इसके गवर्नरों के कारण है। इस कंपेंडियम के भाषण इसके साक्षी हैं। ये भाषण समय-यात्रा को भी दर्शाते हैं और विचारों, मुद्दों और चिंताओं की झलक देते हैं जिनमें रिज़र्व बैंक वर्षों से लगा हुआ है।

6. भाषणों में कवर हुए व्यापक दायरे के विचार - मौद्रिक नीति, बाह्य क्षेत्र प्रबंधन, वित्तीय क्षेत्र के मुद्दे और वास्तविक अर्थव्यवस्था, आर्थिक विकास और गरीबी उन्मूलन, बैंकों और वित्तीय बाजारों का विनियमन और आर्थिक नीति के वैश्विकृत माहौल में प्रबंधन की चुनौतियां - रिज़र्व बैंक के व्यापक दायित्व और व्यापक जनहित के प्रति उसकी चिंता को दर्शाते हैं।

7. रिज़र्व बैंक जैसी जन नीति वाली संस्था के लिए, कोई भी लक्ष्य अंतिम नहीं होता; नई चुनौतियों और कार्यों के कारण नए-नए लक्ष्य बनते रहते हैं। सीखना भी कभी समाप्त नहीं होता। हर घटना और संकट से सबक सीखे जाते हैं और नीतिगत और संस्थागत सुधार लागू किए जाते हैं।

8. भाषणों का यह कंपेंडियम रिज़र्व बैंक में हमें इस बात की याद दिलाता है कि निरंतर ऐसे कार्य करने हैं जिनसे हम उपयोगी और संगत बने रहें। इस प्रयास में, बैंक के लिए यह आवश्यक है कि वह डोमेन ज्ञान में आगे बना रहे और उस उभरती बाजार अर्थव्यवस्था की मुख्य चिंता के प्रति संवेदनशील बना रहे जिसमें अब भी सैकड़ों मिलियन लोग रहते हैं।

9. हमें आशा है कि यह पुस्तक रिज़र्व बैंक का घटनापूर्ण इतिहास और देश निर्माण में इसका योगदान उपलब्ध कराएगी

10. समापन में, इस पुस्तक के विमोचन को रिज़र्व बैंक के प्लेटिनम जयंती समारोह में मुख्य घटना बनाने के लिए हम प्रधान मंत्री और सभी पूर्व गवर्नरों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं।